IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सरकारी एवं निजी विद्यालयों के कला वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक लब्धि (ण्फ) का अध्ययन

डॉ. प्रज्ञा श्रीवास्तव

एसोसिएट प्रोफेसर,

बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

सारांष

प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में सामाजिक लब्धि का स्तर क्या है। न्यादर्ष हेतु जयपुर षहर के सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला वर्ग 300 विद्यार्थियों (150 छात्र एवं 150 छात्रायें) को यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया है। किषोरो की सामाजिक लब्धि मापने के लिए स्वनिर्मित सामाजिक लब्धि मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विष्लेषण हेतु मध्यान, प्रमाप विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है। परिणाम दर्षाते है कि सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं, निजी विद्यालयों के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

षिक्षा वर्तमान षताब्दी की वह सबसे महत्वपूर्ण संस्थागत प्रक्रिया है जो व्यक्ति तथा समाज के जीवन को विभिन्न रूपों में प्रभावित करती है। षिक्षा ने आज औधोगिक विकास, आर्थिक संरचना, राजनैतिक जीवन, सामाजिकपूर्ण निर्माण और व्यक्तित्व के विकास को एक दूसरे से सम्बन्धित कर दिया है। यही कारण है कि आधुनिक समाज में षिक्षा को सामाजिक नियंत्रक के एक महत्वपूर्ण अभिकरण के रूप से देखा जाता है।

आज के युग में हम बालकों को वह षिक्षा नहीं दे पा रहे है जिसकी वह हकदार है। स्वामी विवेकानंन्द का कथन है कि हमें वह षिक्षा देनी चाहिए जिससे व्यक्ति चरित्रवान बनता है और उसकी प्रतिभा व मन की षक्ति का विस्तार होता है। सामाजिक लब्धि को आधार बनाकर ही भविष्य की षिक्षा का सही स्वरूप निर्धारित किया जा सकता है। वर्तमान षिक्षा के भीतर सामाजिक संस्कारों को पैदा करने वाली षक्तियों की आवष्यकता हमेषा से महसूस की गई है। इसमें कोई संदेह नहीं कि समाज में बड़े पैमानें पर परिवर्तन लाने

का कार्य सामाजिक षिक्षा ही कर सकती है। जिससे वह जीवन का स्वरूप समझ सके और इसमें आत्मनिर्भर बनने की क्षमता व कर्मठता उत्पन्न हो सके। किषोरों में व्यक्तिगत विभिन्नताएं पाई जाती है। प्रत्येक किषोर की विभिन्न सामाजिक क्षमता जैसे नैतिक, आध्यात्मिक मूल्य, बुद्धि, कल्पना षक्ति निर्णय, तर्क षक्ति आदि के सन्दर्भ में दूसरे व्यक्ति से भिन्न होती है। सामाजिक लब्धि व्यक्ति के सामाजिक स्तर को व्यक्त करती है। परम्परागत सामाजिक मूल्यों एवं वर्तमान मूल्यों को यथार्थ के धरातल पर रखकर उनके समन्वय पर बल देना ही सामाजिक लब्धि का सही अर्थ है। आज के किषोर को इन्ही मूल्यों की ज्ञान प्राप्ति की उपलब्धि ही सामाजिक लब्धि है अर्थात् षैक्षिक विषयों के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों की जानकारी की प्रतिषतता का मापदण्ड किषोर की सामाजिक लब्धि का स्तर बताता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के किषोरों में सामाजिक लब्धि का स्तर क्या है।

उद्देष्यों :– सरकारी एंव निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के विद्यार्थीयों की सामाजिक लब्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

1. स्रकारी विद्यालय के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. निजी विद्यालय के कला वर्ग के किषोर छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. सरकारी एवं निजी विद्यालय के कला वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्ष : न्यायादर्ष हेतु जयपुर शहर के सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालययों के 300 विद्यार्थियों (150 छात्र एवं 150 छात्राये) को यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया है।

उपकरण :– किषोरों की सामाजिक लब्धि मापने के लिए स्वानिर्मित सामाजिक लब्धि मापनी का प्रयोग किया गया है। इस मापनी की विष्वसनीयता परीक्षण पुनः परीक्षण विधि द्वारा 0.8162 प्राप्त हुई।

सांख्यिकी प्रविधियाँ :– प्रदत्तों के विष्लेषण हेतु मध्यमान प्रमापविचलन, कान्तिक अनुपात प्रयोग किया गया है।

परिणाम एवं विवेचना :– प्रदत्तों के विष्लेषण के पष्चात प्राप्त परिणामों को निम्नाकिंत तालिका 1,2 एव 3 दर्षाया गया है।

तालिका – 1

''सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के किषोर छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि का तुलनात्मक अध्ययन''

क्रं.सं0	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थक अन्तर
1	छात्र	75	149.44	11.59	0.30	.5 स्तर पर असार्थक
2	छात्रा	75	150.48	10.91		

तालिका – 2

''निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के किषोर छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि का तुलनात्मक अध्ययन''

क्रं.सं0	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थक अन्तर
1	छात्र	75	148.15	10.65	0.49	.5 स्तर पर असार्थक
2	छात्रा	75	152.17	9.42		

तालिका – 3

''सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के किषोर छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि का तुलनात्मक अध्ययन''

क्रं.सं0	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थक अन्तर
1	छात्र	150	148.80	11.23	1.49	.5 स्तर पर असार्थक
2	छात्रा	75	150.16	10.22		

उपरोक्त तालिकाओं के गहन निरीक्षपेपरान्त स्पष्ट होता है कि सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला के किषोर छात्र एवं छात्राओं, निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के किषोर छात्र एवं छात्राओं तथा सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रान्तिक मूल्य सांख्यिकीय दृष्ट्रि से .05 सार्थकता स्तर पर असार्थक हैं निष्कर्षत कहा जा सकता है कि विद्यलाय के प्रकार एवं लिंगभेद का विद्यार्थियों की सामाजिक लब्धि पर कोई प्रभाव नही पड़ता है।

अतः पूर्ण निर्मित षून्य परिकल्पना एवं निजी विद्यालय के कला वर्ग छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' स्वीकृत होती है।

इसका प्रमुख कारण आज सरकारी एवं निजी विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थियों में सामाजिक जागरूकता का विकास समान रूप से करता हैं आज विद्यार्थी साप्ताहिक तथा मासिक पत्र पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों का समान रूप से अध्ययन करते है जो विद्यार्थियों की सामाजिक जागरूकता को आधार प्रदान करते है।

षैक्षिक उपयोगिता :– वर्तमान प्रतियोगिता व ज्ञान के विस्फोट के युग में जब प्रत्येक विद्यार्थि अपने समाज भविष्य व कैरियर के प्रति जागरूक होकर विचार विमर्ष रहा है तो इस समय में प्रस्तुत षोध की उपयोगिता सर्वाधिक हैं इसका लाभ विद्यालय कक्षा षिक्षक के दौरान विद्यार्थियों को हो सकेगा। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी तथा अध्यापक सामाजिक लब्धि के प्रति चेतना से प्रोत्साहित होगे। विद्यार्थी भी समाज के प्रति अपने कर्तव्य का विकास कर सकेगें। इस षोध के अध्ययन के पष्चात् षिक्षकों एवं संस्था प्रधानों में भी समाज के प्रति चेतना का विकास हो सकता है।

संदर्भ

1. डीगंरा रजनी : ''कनक्टीवीटी ऑफ म्फ एण्ड ैफ ए स्टडी ऑफ कषमीरी माईग्रेट यंग वूमन'', जम्मू (2005)
2. ट्रेवर हर्व सेनः ''कक्षकक्ष में भावात्मक एवं सामाजिक वातावरण को समझने के लिए एक अध्ययन'' यूनिवर्सिटी टेक्सास (2004)
3. गुप्ता एस ''उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किषोरियों में सामाजिक प्रबन्ध का एक अध्ययन'' पी.एच.डी.
4. ए.मोदक ए. : ''पहाडी क्षेत्र में नेपाली औरतों का सामाजिक बदलता तथा षिक्षा का एक अध्ययन'' पी.एच.डी.
5. पण्डे.एस. : उच्च स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों का समाजनीतिय सितारा एवं सामाजिक लब्धि का एक अध्ययन'' अवध विष्वविद्यालय।